आर्या छन्द

आर्या छन्द की प्रकृति-

चूँकि इस छन्द में मात्राओं की गणना की जाती है, अतः यह मात्रिक छन्द है।

आर्या छन्द का लक्षण-

इस छन्द का लक्षण है-

यस्याः प्रथमे पादे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।

अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या।।

अर्थात् जिसके प्रथम चरण में तथा तृतीय चरण में भी बारह मात्राएं हों, द्वितीय चरण में अठारह तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएं हों, वह आर्या है।

उदाहरण-

शुद्धान्तदुर्लभमिदं रूपं यदि वनवासिनो जनस्य।

दूरीकृताः खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभिः।।

स्पष्टीकरण-

प्रस्तुत श्लोक में प्रथम तथा तृतीय चरण में 12 मात्राएं, द्वितीय चरण में 18 मात्राएं तथा चतुर्थ चरण में 15 मात्राएं हैं।

विशेष-

पिङ्गलच्छन्द ग्रन्थ में इस छन्द को पथ्या संज्ञा दी गई है।

Dhananjay Vasudeo Dwivedi